

सीएफएलडी (दलहन /तिलहन) और दलहन बीज हब पर राज्य स्तरीय समीक्षा कार्यशाला आयोजन

22-23 नवंबर 2021 को भाकृअनुप-अटारी, जोन-III, कानपुर और बाँदा कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, बाँदा द्वारा संयुक्त रूप से सीएफएलडी (दलहन/तिलहन) और बीज हब की दो दिवसीय राज्य स्तरीय समीक्षा कार्यशाला का आयोजन बीयूएटी, बाँदा में किया गया।

22 नवंबर 2021

बुन्देलखण्ड के साथ-साथ पूरे देश में दलहन एवं तिलहन का उत्पादन बढ़ा है। दलहन उत्पादन में हम आत्मनिर्भरता की ओर बढ़े इसके लिये हम सभी वैज्ञानिकों का प्रयास होना चाहिये। सशक्त एवं वैज्ञानिक पद्धति आधारित प्रसार कार्य से उत्पादन में वृद्धि अवश्य सम्भावी है। कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि क्रान्ती का केन्द्र है, तकनीकी प्रसार में प्रसार वैज्ञानिकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। शोध उपरान्त क्षेत्रानुकूल तकनीकियों के प्रसार हेतु वैज्ञानिकों एवं कृषकों का जुड़ाव फलदायी सिद्ध होता है। प्रसार कार्य में सफलता के लिये कृषकों से भावनात्मक जुड़ाव जरूरी है। तकनीकी एवं उपज अन्तर क्यों है? जानना आवश्यक है और इस पर कार्य करने की आवश्यकता है। बुन्देलखण्ड दलहन तिलहन का कटोरा है परन्तु अधिक उपज एवं उत्पादकता बढ़ाने हेतु हर सम्भव सार्थक प्रयास विश्वविद्यालय द्वारा किया जायेगा। मोटे अनाजों एवं लघु दालों का विकास कृषक स्तर पर करना अति आवश्यक है। यह वक्तव्य कृषि विश्वविद्यालय, बाँदा के मा० कुलपति प्रो० नरेन्द्रप्रताप सिंह ने कार्यशाला में दिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में ऑनलाइन शामिल हुए उप महानिदेशक (कृषि प्रसार) डॉ. एके सिंह ने कहा कि विज्ञान को किसानों तक पहुंचाने में कृषि विज्ञान केंद्रों की भूमिका अहम है। वैज्ञानिकों द्वारा आधुनिक प्रसार विधियों के साथ-साथ अग्रिम पंक्ति के प्रदर्शनों के माध्यम से तकनीकी प्रसार एक महत्वपूर्ण कदम है। मुझे विश्वास है कि इस कार्यशाला के माध्यम से वैज्ञानिक इसे बेहतर तरीके से फार्म पर स्थापित कर सकेंगे। उच्च दलहन उत्पादन मॉडल को जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में नवीनतम पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेस के साथ किया जाना।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मा. कुलपति प्रो. सिंह ने यह भी कहा कि दलहन, तिलहन और मोटे अनाज किसानों की आय बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं। मोटे अनाज वर्तमान में भूली हुई फसलों की श्रेणी में आ गए हैं। पिछली एक पीढ़ी से हमारी खाने की थाली पूरी तरह से गायब है जिसके कारण हम मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, गुर्दे की बीमारी, कुपोषण और अन्य बीमारियों का प्रभाव देख रहे हैं। प्रदेश के सभी जिलों में दलहन और तिलहन का उत्पादन बढ़ाने के लिए नई तकनीकों के प्रसार हेतु इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इस कार्यशाला में प्रदेश के सभी 89 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक एवं प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के डीन डॉ. एसके चतुर्वेदी ने कहा कि दलहन का उत्पादन 2001 में जितना था उतना आज हम सिर्फ चने का उत्पादन कर रहे हैं इस उपलब्धि में कृषि विज्ञान केन्द्र की सीड हब परियोजना की भूमिका महत्वपूर्ण है। बुन्देलखण्ड के साथ-साथ देश के अन्य क्षेत्रों में दाल के उत्पादन कम होने के क्या कारण हैं इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

प्रारंभ में डॉ. अतर सिंह, निदेशक भाकृअनुप-अटारी कानपुर द्वारा सभी का अतिथियों का स्वागत किया गया। उन्होंने कहा कि दलहन, तिलहन महत्वपूर्ण फसलें हैं, कृषि वैज्ञानिकों द्वारा सीएफएलडी के माध्यम से उन्नत प्रौद्योगिकियों का प्रसार कार्य किया जाता है। उन्होंने कहा कि दो दिवसीय कार्यशाला में वैज्ञानिक अपने काम, अनुभव और समस्याओं के बारे में अपने विचार साझा करेंगे और विशेषज्ञों द्वारा उचित प्रबंधन के सुझाव भी दिए जाएंगे।

निदेशक प्रसार बीयूएटी बाँदा प्रो. एन.के. बाजपेयी ने दो दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा बताते हुए प्रदेश के सभी जिलों और केवीके के सभी अतिथियों और वैज्ञानिकों का स्वागत किया। सह निदेशक प्रसार डॉ. नरेन्द्र सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

23 नवंबर 2021

कृषि में उच्च उत्पादन के लिए बीज एक प्रमुख घटक हैं। न केवल बीज का प्रमाणीकरण बल्कि उसकी शुद्धता भी आवश्यक है। किसानों को क्षेत्रीय रूप से उपयुक्त किस्मों का चयन करते समय जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ उत्पादन के विभिन्न कारकों को ध्यान में रखना चाहिए। अधिक उपज देने वाली वेराइटी जो 10 वर्ष से अधिक पुरानी न हो, शामिल की जानी चाहिए। 89 कृषि विज्ञान केंद्रों की रिपोर्ट के निष्कर्ष से, यह पाया गया कि प्रदर्शनों की उपज चेक से 15-20% अधिक है। इससे पता चलता है कि तकनीक के उचित उपयोग से किसान की आय में वृद्धि हो सकती है। वर्तमान में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव अनाज निर्माण और फसलों के कुल उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। यह शोध का विषय है कि क्या हम बुवाई के समय परिवर्तन करके उपज बढ़ा सकते हैं। ये बातें बीयूएटी, बांदा के माननीय कुलपति प्रो. नरेंद्र प्रताप सिंह ने बीयूएटी, बांदा ने कार्यशाला में कही।

प्रो. सिंह ने वैज्ञानिकों से अपील की कि किसानों की आय दोगुनी करने के लिए हमें उत्पाद के साथ-साथ मूल्य संवर्धन पर भी जोर देना होगा। चने और चने से बनी विभिन्न उपभोग की वस्तुओं जैसे बेसन, सत्तू, मिठाई और अन्य की कीमत में कई गुना अंतर होता है।

दलहन फसल के विशेषज्ञ और रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के डीन डॉ. एसके चतुर्वेदी ने कहा कि कई क्षेत्रों में दलहन का उत्पादन अभी भी राष्ट्रीय औसत उत्पादन के बराबर नहीं है। बुंदेलखंड को दालों का कटोरा कहा जाता है लेकिन यहां भी औसत उपज बहुत कम है। कम उत्पादन के लिए हमें सजीव व अजीव कारकों को देखना पड़ेगा की किसका प्रभाव उत्पादन पर ज्यादा पड़ रहा है। वर्तमान में बाजार में कई तरह के उर्वरक उपलब्ध हैं। संस्तुति के अनुसार दलहन एवं तिलहन में शुष्क क्षेत्रों में अधिक उत्पादन के लिए समय पर तरल उर्वरक का छिड़काव कर अधिक उत्पादन अर्जित किया जा सकता है।

समापन समारोह के दौरान निदेशक प्रसार प्रो. एनके बाजपेयी ने उपस्थित सभी वैज्ञानिकों से फसल पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन करने की अपील की। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार बीज और बुवाई के समय में परिवर्तन करके सफलता पाई गई है। हमें इस पर गहराई से सोचना होगा और सोचना होगा। किसान के खेत पर समूहबद्ध प्रथम पंक्ति प्रदर्शन अभी भी किसानों में तकनीकी के प्रति विश्वास पैदा करता है।

बीज केंद्रों को परियोजना के तहत 1000 क्विंटल बीज उत्पादन के लक्ष्य को पूरा करना चाहिए। हमें ब्रीडर सीड के साथ-साथ बेस सीड के उत्पादन पर भी ध्यान देना होगा। डॉ. साधना पांडेय, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-अटारी, जोन-III, कानपुर ने वैज्ञानिकों से अपील की कि वे सूचना, रिपोर्ट उचित प्रारूप में भेजें और समय पर भेजें। हमें समय पर डेटा मिल जाएगा और उचित कार्रवाई के लिए विभिन्न संस्थानों को भेजा जा सकता है। प्रो. बाजपेयी ने कार्यशाला को सफल बनाने के लिए प्रदेश के कोने-कोने से आए सभी वैज्ञानिकों का आभार व्यक्त किया।

State Level Review workshop on CFLD (Pulses/Oilseed) & Pulses Seed Hubs on 22-23rd Nov. 2021

Two days State Level Review workshop of CFLD (Pulses/Oilseed) and Seed Hubs was jointly organized by ICAR-ATARI, Zone-III, Kanpur and BUAT on 22-23rd November 2021 at BUAT, Banda.

22nd November 2021

The production of pulses-oilseeds has increased but needs attention in the whole country with Bundelkhand. In order to move towards self-reliance in pulses production, efforts were made by all of scientists of SAUs/ICAR/KVKs. Strong and scientific method based extension work is definitely possible to increase production. Krishi Vigyan Kendra is the center of agricultural revolution, the role of extension scientists is very important in technological dissemination and its application. After research, the association of scientists and farmers proves fruitful for the dissemination of field-friendly technologies. Emotional connection with farmers is essential for success in extension work. Why is there a difference in technology and yield? Need to know and need to act on it. Bundelkhand is a bowl of oilseeds-pulses but every possible meaningful effort will be made by the university to increase the yield and productivity. It is very important to develop coarse cereals and small pulses at the farmer level. This statement was given by Prof. Narendra Pratap Singh, Hon'ble Vice Chancellor of Banda Agricultural University, Banda.

DDG (Agricultural Extension) Dr. AK Singh, who joined online as the Chief Guest in the program, said that the role of Krishi Vigyan Kendras is an important center to bring science to the farmers. Technological dissemination through front line demonstrations along with modern dissemination methods by scientists is an important step. I am sure that through this workshop, scientists will be able to establish it in a better way on the farm. High Pulses production models must be replicate with latest package of practices in the climate changing scenario and Rice-wheat systems must be utilized for Pulses & Oilseed production.

Chairing the program, Vice Chancellor Prof. Singh also said that pulses, oilseeds and coarse cereals play an important role in increasing the income of farmers. Coarse cereals have come under the category of forgotten crops at present. Our food plate is completely missing from the last one generation, due to which we are seeing the effect of diabetics, high blood pressure, heart disease, kidney disease, malnutrition and other diseases. This workshop has been organized for the dissemination of new technologies to increase the production of pulses and oilseeds in all the districts of the state. Scientists and representatives of all 89 Krishi Vigyan Kendras of the state are participating in this workshop.

Special Guest Dr. SK Chaturvedi, Dean of Rani Laxmibai Central Agricultural University, Jhansi said that now production of gram alone is as much as the total production of pulses was in 2001. There is need to find out the reasons for the low production of pulses in Bundelkhand and other regions of the country.

In the beginning the warm welcome was given by Dr. Atar Singh, Director ICAR-ATARI Kanpur. He said that pulses, oilseeds are important crops, special attention has been given on the dissemination of improved technologies by agricultural scientists through CFLDs. He said that in the two-day workshop, scientists would share their work, experiences and ideas on the problems being faced by them and suggestions for proper management would also be given by the experts.

Director Extension BUAT Banda Prof. NK Bajpai welcomed all the guests and scientists from all the districts and KVKs of the state, given outline of the two-day program. Co-Director Extension Dr. Narendra Singh proposed vote of thanks and Dr. Dheeraj Mishra conducted the program. University officials were present in this workshop.

23rd November 2021

Seeds are a major component for higher production in agriculture. Not only the certification of the seed but its purity is also necessary. Farmers should keep in mind the various factors of production along with climate change while selecting the regionally suitable varieties. High yielding varieties which are not older than 10 years old should be included. From the conclusion of reports of 89 Krishi Vigyan Kendras, it was found that the yield of the demonstrations ranges between 15-20% more than the checks. This shows that proper use of technology can increase the income of the farmer. At present, the effect of climate change is having an adverse effect on the grain formation and total production of crops. It is a matter of research whether we can increase the yield by making changes at the time of sowing. These things were said by Prof. Narendra Pratap Singh, Hon'ble Vice Chancellor of BUAT, Banda in the State level workshop on CLFD (Pulses-Oilseed) & Seed Hubs jointly organized by BUAT, Banda and ICAR-ATARI, Zone-III, Kanpur on 23rd November 2021.

Prof. Singh appealed to the scientists that in order to double the income of the farmers, we have to emphasize on value addition along with the product. There is a manifold difference in the price of gram and various consumption items made of gram such as gram flour, sattu, sweets and others.

Dr. SK Chaturvedi, an expert on pulses crop and Dean of Rani Laxmibai Central Agricultural University, Jhansi, said that the production of pulses in many areas is still not equal to the national average production. Bundelkhand is called the bowl of pulses but here also the average yield is very less. For less production, we have to see the biotic and non-biotic factors having more effect on the production. There are many liquid fertilizers currently available in the market. According to the recommendation, for more production in dry areas in pulses and oilseeds, by spraying liquid fertilizer in time, more production can be earned.

During the closing ceremony, Director Extension of Agricultural University, Banda, Prof. NK Bajpayee appealed to all the scientists present to study the effect of climate change on the crop. According to the available data, success has been found by changing the seed and sowing time. We have to think deeply and think on this. The Cluster front line demonstrations on the farmer's field still confidence in the technology among the farmers.

The seed hubs should fulfill the target of producing 1000 q seed under the project. We have to pay attention to the production of base seed along with breeder seed. Dr. Sadhna Pandey, Principal Scientist of ICAR-ATARI, Zone-III, Kanpur appealed to scientists for sending the information, reports in proper format and send it on time. We will get the data in time and can be sent to various institutions for appropriate action. Prof. Bajpayee thanked all the scientists who came from every corner of the state for making the workshop a success.

